माता से परिचय करने वाली गीत

अहो! अद्भुत गम्भीर प्रतीत्यसमुत्पाद के तथता का साक्षात उपदेश देने वाले गुरु,
जिसकी कृपा अपरिपूर्णय (जिसकी अहसान चुका नहीं सकता) है, वे मेरे हृदय में वास करें। अनायास जो भी स्मृति में आता है, मैं तीन शब्द कहना चहता हूँ॥ 1

बहुत समय से खोया हुआ (अनादिकाल से जान नहीं पाया हुआ) उस कृपालु बूड़ी मॉ (चित्त के धर्मता) जो इस पागल बालक (जो दर्शन के अनवेषक है) के साथ रहता है, पर पहचान नहीं पाया, अब लगता है कि उसकी परिचय होने ही वाला है ॥2

भ्रता प्रतीत्यसमुत्पाद ने जो चुपचाप कहे हैं उसके (आधर पर जब परीक्षा नहीं करते हैं तो) लगता है यह सत् है (परीक्षा करने पर लगता है) यह सत् नहीं है।
नाना प्रकार के ग्राह्य और ग्रहक जो है, ये माता (शून्यता) के मुस्कराहट है, और जन्म-मृत्यु के जो विकार है, यह माता (शून्यता) के मिथ्या शब्द है॥ 3

अकपटी माता ने मुझे ठगा है।
आशा है भ्रता प्रतीत्यसमुत्पाद मुझे बचायेगा।
और एकमात्र बूडी माता के कृपा से मैं मुक्त हो जाऊंगा॥ 4

यदि ग्राह्य-ग्राहकत्व (जो हमें आभास होते हैं) ऐसा ही (सत्य) है तो,
तीनों कालों के जिनों (बुद्धों) द्वारा (हमें) उद्धार नहीं कर सकता।
परन्तु ये जो विभिन्न विकार है, ये सब मेरे अविकारी माता (स्वभाव शून्यता) के विकार है,
इस लिए मुक्त हो सकता है॥ 5

माता जो अनिर्वचनीय और असिद्ध है, वह परस्पर आश्रित होते हुए किसी भी रूप में प्रकट हो सकती है,
इतनी मात्र में निहित अर्थ है। 6

पिता (प्रतीत्यसमुत्पाद) को खोजने पर नहीं मिल पाना, बूडी मा (शून्यता) की मिलना लगता है।
(मैने) मेरे पिता को मा के गोद में पाया है।
इस लिए कृपालु माता-पिता ने मुझ बालक का उद्धार किया है, ऐसा कहा जाता है।7

माता के मुखडा न एक है न अनेक,
जो मेरे भ्रता प्रतीत्यसमुत्पाद के दर्पण में,
जैसे अग्राह्य रूप से स्थित है ऐसा लगता है,
पर मेरे जैसे पागल (उसकी) विचार नहीं कर पाया है। 8

नागर्जुन और चन्द्रकीर्ति ने अपने उपदेश (मूलमध्यमकारिका, मध्यमकावतार आदि) वायु में भेजा है,
मञ्जुगर्भ ने (मूलमध्यमकारिकी तथा मध्यमकावतार पर टीका के रूप में) एक पक्षी के माध्यम से भेजा (सिखाया) है,
इस के कारण (हम) दूर तक खोजने की श्रम से मुक्त होकर,
साथ में निवास करने वाली मा का दर्शन होगी ऐसा आशा है। 9

वर्तमान में हमारे (गेलुग सम्प्रदाय के) बीच के कुछ विद्वान,
शाश्वत, सत्यसिद्ध आदि शब्दों पर अभिनिवेश करने के कारण,
(हमें दिखने वाला) इस स्थूल आभास (आत्मग्रह) का (निषेध न कर) (उसे) वैसे ही छोड़कर,
एक श्रृङ्ग वाले निषेध्य का अनवेषण करते दिखता है। 10

अवारणों से मुक्त बूड़ी मा (शून्यता) के मुखडा तो,
कोई स्थूल होता है ऐसा हमने नहीं सुना है।
मर्म को न बेधने वाले अति वर्तालापों से,
उस माता (स्वभावशून्य) की भाग जाने की संदेह है।11

(सामान्यतया धर्मों की) सत्ता होते हुए भी ऐसा नहीं लगता है कि (जिस तरह हमें आभास होता है) इस प्रकार की विषम विरोधाभास होगा,
पर ऐसा प्रतीत होता है कि यह हमारे अविभाज्य प्रेमी, अप्रमादी, शान्त एवं सुखी माता-पिता (शून्यता और प्रतीत्यसमुत्पाद) जैसे होते है। 12

वैभाषिक, स्वात्रान्तिक और विज्ञानवाद के तीन पूर्वदिशा के उपाध्यायों (ज्ञानगर्भ, शान्तरक्षित, कमलशील) ने,
इस चूने के पत्थर की समान श्वेत हाथी रूपी माता (स्वभावशून्य) को (जाने बिना),
मुस्कराते रंगीला भारतीय बाघ के चित्र रूपी जड़ (बाह्यार्थसत्),
बुद्धिहीन पागल वानर, अद्वैत शाश्वत (स्वलक्षणसत्) रूपी आक्रमक भालू के बच्चा आदि अनेक व्याहार करके,
उन्होंने बूड़ी मॉ (स्वभावशून्य) को खो दिया है। 13-14

साक्य, ञिङ्मा, (दगपो ल्हाजे के शिष्य दुसुम ख्येनपा के अनुयायी) कर्मापा और (डोगोन च़ड्पा ज़रेस के अनुयायी) डुगपा आदि अनेक विद्वानों ने, (यद्यपि सक्या पा में अनेक मत है, उनमें से छ़रछेन लोसल ज़्छो आदि) व्यक्त, शून्य अग्राह्य स्वसंवेद (को धर्मों के वस्तुस्थिति माना है), (ञिङ्मापा विद्वानों ने) आदिशुद्ध, (आदि-गुण सम्पन्न), अनाभोग समन्तभद्र (को धर्मों का वस्तुस्थिति माना है), (कज़ुद पा विद्वानों ने धर्मों को) हेतु-प्रत्यय द्वारा अकृत, सहजसुख धर्मकाय महामुद्रा (को धर्मों का वस्तुस्थिति माना है) (जङ् थङ सग पा आदि सभी धर्म) न सत् है न असत्, वह सत् और असत् से परे है, इत्यादि विभिन्न व्यवहारों के द्वारा कहा गया है। यदि ये सब मत लक्ष्य को बेधने वाला होता तो अच्छा होता, पर हम को पता नहीं चल रहा है कि आप लोगों के लक्ष्य क्या है। 15-16

आपको (वैभाषिक और स्वातान्त्रिक) इसकी चिन्ता नहीं करना होगा कि बह्यार्थ के नष्ट किये बिना (स्वभाव से असिद्ध स्वीकार नहीं किया जा सकता),
इस लिए दोनों बाह्यार्थ वादियां खुश रहें।
स्वसंवेद न होने पर भी प्रमाण द्वारा विषय का ज्ञात किया जा सकता है,
इस लिए विज्ञानवादी खुश रहें।
(परमार्थतः सभी धर्म) स्वलक्षण में सिद्ध न होने पर भी (व्यवहार में नाम और संकेत मात्र से व्यपार किया जा सकता है)
जो अद्भुत प्रतीत्यसमुत्पाद के कारण (परस्पर अमिश्रित स्थित होता है),
इस लिए पूरब के तीनों उपाध्यायों के खुश होना चाहिए।।17

व्यक्त और शून्य विरोध नहीं है, इस लिए ग्रहण कर सकता है।
अतः शिष्य और आमनय परम्परा पालन करने वाले शंकित न हो।
आदितः शुद्ध होने पर भी भद्र और अभद्र सम्भव होता है।
इस लिए विद्याधरों को भद्र का अभिविनेश नहीं करना चाहिए।18

कृतिम भावना से भी सहज का उदय होता है,
इस लिए वृद्ध साधकों को हठ (जिद्द) करने की आवश्यकता नहीं है।
सत्-असत् अप्रपञ्च का स्वीकार किया जा सकता है,
इस लिए हठी तार्किकों को घबड़ाना नहीं चाहिए।19

ऐसा सम्भव हो सकता है आप लोगों में शास्त्रों का अल्प अध्ययन के कारण व्यवहार के प्रयोग में अनभिज्ञ हो।
मैं आप लोगों का अनादर नहीं करता हूँ। फिर भी यदि आप को ठेस पहुँचा है तो हम आपका क्षमा प्रार्थी है।। 20

मैं सब कुछ जानने वाले कोई बलवान व्यक्ति नहीं हूँ।
परन्तु पूर्वजों (नागर्जुन आदि तथा चोङ्खापा) के अच्छी अश्व रूपी (विमल) शास्त्रों का,
निरन्तर एवं श्रद्धा पूर्वक (प्रयत्न से) वाहन करने में निपुणता प्राप्त करने के कारण,
आशा करते हैं कि मैं (सत्यग्रह तथा आलस के) संकीर्ण मार्ग (कर्म और क्लेश से) पार कर सकूँ।। 21

(उस स्वभाव से शून्य माता को दूर से) खोजने की आवश्यकता नहीं है, क्यों कि वह स्वयं ही खोजने वाले के साथ रहता है।
(प्रतीत्यसमुत्पाद को) सत्य में अभिनिवेश न करें क्यों कि (आभास और स्थिति प्रतिकूल होने के कारण) मिथ्या ही है।
(व्यवहार में) मिथ्य का भी निषेध न करें, क्यों कि वह (परमार्थतः स्वभाव से असत् होने के कारण) सत्य है।
अतः (व्यवहार सत् होने के कारण) उच्छेद नहीं है और (परमार्थतः असिद्ध होने के कारण) शाश्वत नहीं है। अतः (दो कोटियों से अप्रपञ्च धर्मता) में विश्रम किया जा सकता है।। 22

माता की (स्वभाव से शून्य का सक्षात) दर्शन न होने पर भी नाम मात्र से कृपालु माता-पिता (शून्यता एवं प्रतीत्यसमुत्पाद) जो चिर काल से खोया है, वे अपने सामने मिल गया हो ऐसा आभास होता है। इस के लिए नागर्जुन तथा उनके शिष्यों का कृतज्ञा ज्ञापित करता हूँ। सुमतिकीर्ति का कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। कृपलु गुरु का कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। इन के कृतज्ञता ज्ञापित करने हेतु मैं अपने माता (स्वभाव से शून्य) का सत्कार करता हूँ॥ 24

अनुत्पाद अनिर्वचनीय वृद्धा मा (स्वभाव से शून्य) ने,
विद्या रूपी कुमार के साथ मिलकर,
भद्रचार के महोत्सव के द्वारा,
सभी मा रूपी जगत को स्थायी सुख की ओर ले जाएँ॥25

अहो रोलपे दोर्जे (ललित वज्र),
यहां खुशी के नृत्य करके,
अहो त्रिरत्न का पूजा करते हैं॥ 26

माता (शून्यता) की परिचय करने वाले इस मिथ्या शब्द प्रतिश्रुति स्वर को महामध्यमक में अत्यन्त अधिमुक्त चङ्क्य रोलपे दोर्जे ने उत्तम-निर्माण-स्थल पञ्चशिखर पर्वत पर कहा है। इसे भिक्षु गेलेग नमखा ने लीपिबद्ध किया है॥

इस हिन्दी अनुवाद को प्रो. पेन्पा दोर्जे ने दिनांक 3.02.2021 को सुदूर दक्षिण भारत में अपने निवास स्थान में किया है। इस अनुवाद द्वारा संचित पुण्य परम पावन जी की दीर्घायु तथा जगत की कल्याण हेतु परिणामना करता हूँ॥

भवतु सब्ब मंगलम्॥